बी० ए० II समाजशास्त्र

Date 3/2/2022 Page No.:

उपभोक्ता वाद (Consumerism)

उपभोक्ताओ की जागरुकता के स्तर को किसी देश की प्रगति का सूचक माना जाता है। उपभोक्तावाद एक ओर अर्थ से जुड़ा होता है, क्योंकि आय का क्रियात्मक पक्ष है। दूसरी ओर यह समाज व संस्कृति से जुड़ा होता है

उपभोक्तावाद का अर्थ एवं परिभाषा —

किसी वस्तु या पदार्थ को उपयोग करने वाले व्यक्ति को उपभोक्ता कहते है। जब उपभोक्ता का जीवन बदलती है तो वह उत्पादनो को सिर्फ दिखाने के लिए प्रयोग करता है। उपभोक्ता की इसी आदत प्रतिमान को उपभोक्तावाद कहते है।

पी० के० अग्रवाल के अनुसार — "उपभोक्ता को सही-सही सूचना उपलब्ध कराना बाजार पारदर्शिता कामयाब उपभोक्ता संरक्षण उचित मूल्य पर उत्पादन की उपलब्धि उपभोक्ता के लिए प्रभावशाली अधिकार गुणवत्ता पूर्ण एवं सुरक्षित उत्पाद और उपभोक्ता को खतरा या धमकियो से सुरक्षा प्रदान करना ~~कह~~ उपभोक्ता कहलाता है।"

उपभोक्तावाद के कारण —

उपभोक्ता वाद आज वैश्वीकरण से जुड़ा मुद्दा है क्योकि भूमण्डलीकरण के इस दौर में विज्ञापन किसी व्यवसाय सुदृढ़ करने में सहयोगी होता है। विज्ञापनो के कारण किसी उत्पाद के बाजार में आने से पहले ही उससे सम्बन्धित अनेक आकर्षक

विज्ञापन संचार माध्यमो द्वारा कराया जाता है किसी उत्पादक की मार्केटिंग में विज्ञापन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विज्ञापन एजेन्सिया उत्पाद को बाजार में उतारने के पूर्व विज्ञापन द्वारा उपभोक्ताओ को आकर्षित करने का प्रयास करती है।

उपभोक्तावाद की दृष्टि से विज्ञापनो का महत्व बढा है जब उपभोक्ता को वस्तु, सेवा, विचारो से सम्बन्धित जानकारी मिलती है तो वह उत्पाद के गुणो और विशेषताओ की जानकारी के साथ-साथ उसके उपयोग के तरीके को भी जाना जाता है

उपभोक्तावाद की समस्याए –

उपभोक्तावादी संस्कृति के विस्तारीकरण ने जहाँ एक ओर वस्तुओ की माग बढती है। वही घटिया स्तर की वस्तुए भी बाजारो में आने लगी है। जिसके कारण उपभोक्ताओ को ठगा जाता है। वैश्वीकरण और व्यापार व विपणन के निजीकरण के इस युग में उपभोक्ता की जो दुष्कर स्थिति है। वे कमजोर शासन प्रणाली में तमाम गलत और अन्याय पूर्ण कारोबार करते है।

उपभोक्ताओ के दोहन के दोहन मामलो की बढती संख्या को विभिन्न प्रचार माध्यमो से खूब प्रचारित किया और उपभोक्ता अदालते भी उनको प्रश्रय देती है। इन्टरनेट खोलने पर तमाम पीडित उपभोक्ताओ के किस्से मिले पर उनकी असहाय कहानियो पर न तो कोई ध्यान देता है और न ही उनकी सुनवायी होती है। हो सकता है कि सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध कोई वकील अथवा उपभोक्ता सामने आकर बाजार में लोगो की मदद सही अर्थो में करे।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Chitra

"Cultivation of mind should be the ultimate aim of human existence." –B.R. Ambedkar